Degree -2nd. Subsidiary

मानवशास्त्र का अन्य विज्ञानों के साथ संबन्ध (Relation of Anthropology To Other Sciences)

मानवशास्त्र एक ओर प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्धित है तो दूसरी ओर सामाजिक विज्ञानों से। मानवशास्त्र की विभिन्न शाखाओं और उपशाखाओं में भी अपस में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। एक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन शारीरिक मानवशास्त्र के द्वारा और सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्राणी के रूप में सांस्कृतिक मानवशास्त्र के के द्वारा किया जाता है। शारीरिक मानवशास्त्र विशेषत: प्राकृतिक विज्ञानों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है जबकि सांस्कृतिक मानवशास्त्र सामाजिक विज्ञानों से। यद्यपि मानवशास्त्र को प्रमुखत: एक सामाजिक विज्ञान माना जाता है और यह समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा भूगोल के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है, लेकिन साथ ही यह जीव-विज्ञानों (Biological Sciences) के साथ भी सम्बन्धित है। जब शारीरिक मानवशास्त्री एक प्राणी अथवा जीवधारी के रूप में विचार करता है, उसके शारीरिक उद्विकास, बनावट एवं विशेषताओं, आदि का अध्ययन करता है तो वह एक जीव-वैज्ञानिक की भूमिका निभाता है, तब उसे जीव-विज्ञान से सहायता लेनी पड़ती है। यहां हमें यह भी ध्यान में रखना है कि मानवशास्त्र अनेक मानविकीय विषयों; जैसे कला साहित्य और इतिहास से जुड़ा हुआ है। इसका कारण यह है कि मानवशास्त्र की अनेक उपशाखाएं; जैसे- पुरातत्वशास्त्र,

Ajanta Oxford

प्रजातिशास्त्र और भाषा-विज्ञान, आदि मानव की संस्कृतियों को समझने और उनका मूल्यांकन करने का प्रयत्न करती है और कला, साहित्य, संगीत एवं इतिहास, आदि विषय इस कार्य में मानवशास्त्र की सहायता करते हैं।

मानवशास्त्र और प्राकृतिक विज्ञान (Anthropology and Natural Sciences) —

मानवशास्त्र का विभिन्न प्राकृतिक विज्ञानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। इन प्राकृतिक विज्ञानों के विकास के बिना मानवशास्त्र का विकास सम्भव नहीं था। मानवशास्त्र के लिए भूगर्भशास्त्री की सहायता के बिना मानव और उसकी संस्कृति की उत्पत्ति तथा विकास के सही कालक्रम (time sequence) का पता लगाना सम्भव नहीं था। पुरातत्वशास्त्रियों को विभिन्न संस्कृतियों की उत्पत्ति के समय का पता लगाने के लिए प्रस्तरीकृत मानवीय अस्थिपंजरों के अध्ययन के आधार पर मानव की आयु निश्चित करने के लिए तथा अपनी खोजों के कालक्रम का पता लगाने के लिए भूतत्वशास्त्र (Geology) के ज्ञान द्वारा चट्टानों की आयु को निश्चित करना नितान्त आवश्यक है।

मानवशास्त्र विशिष्ट समस्याओं को सुलझाने के लिए अन्य विज्ञानों की खोजों एवं प्रविधियों का उपयोग में लाता है। यदि हम आदिम लोगों के पंचांग (तिथि पत्र) को समझना चाहें तो ऐसी स्थिति में गणित-ज्योतिष (Astronomy) की सहायता लेनी ही पड़ेगी। इसी प्रकार मानवशास्त्री को प्रागैतिहासिक मृत्तिका-शिल्प (Ceramics) का अध्ययन करने हेतु रसायनशास्त्र एवं भौतिकशास्त्र की पद्धतियों का सहारा

लेना पड़ेगा। इस बात का पता लगाने के लिए कि आदिम लोग अपने पर्यावरण की क्षमताओं का कितना उपयोग कर पाते थे, प्रजातिशास्त्रीयों को वनस्पति एवं जन्तु-विज्ञानों (Botany and Zoology) द्वारा प्राप्त सामग्री पर निर्भर रहना पड़ता है। स्पष्ट है कि विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए मानवशास्त्र को अन्य विज्ञानों की सामग्री का प्रयोग करना पड़ता है। साथ ही मानवशास्त्र का जीव विज्ञान, मानविकी तथा सामाजिक विज्ञानों के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है, इनमें काफी पारस्परिक निर्भरता पायी जाती है। बोलस तथा हॉइजर ने बतलाया कि संस्कृति का अध्ययन तथा मानव जीव विज्ञान का अध्ययन निरन्तर एक-दूसरे के अन्तर-सम्बन्धित हैं।